



वर्षीष/द बगि पकिचर/देश-देशांतर/इन-डेपथ: वरुश्व पर्यावरण दविस: प्लासुटकि युग के खतरों को पहचानें

संदरुभ एवं पृषुठभूमा

पर्यावरण की सुरकषा और इसके परतलोगों को जागरूक करने के लयि परतयेक वरुष 5 जून का दनि संयुक्त राषुट्र दवारा वरुश्व पर्यावरण दविस के रूप में आयोजति कयिा जाता है । वैसे इस दनि को दुनयिाभर में मनाने की घोषणा संयुक्त राषुट्र ने 1972 में की थी, लेकनि पहला वरुश्व पर्यावरण दविस 5 जून 1974 को मनाया गया था और इस वरुष 45वाँ वरुश्व पर्यावरण दविस मनाया जा रहा है ।

भारत को मलिी है वैशुवकि मेज़बानी

इस वरुष वरुश्व पर्यावरण दविस की वैशुवकि मेज़बानी भारत को मलिी है । इस अवसर पर सरकारों, उदयुग जगत, समुदायों और सभी लोगों से आग्रह कयिा गया कि वे साथ मलिकर स्थायी वकिलुप खोजें और एक बार उपयुग में आने वाले प्लासुटकि के उत्पादन और उपयुग को जलद-से-जलद रोकें, क्युंकि यह हमारे महासागरों को प्रदूषति कर रहा है, समुद्री जीवन को नषुट कर रहा है और मानव स्वास्थय के लयि खतरा बन गया है । स्थति इतनी वषिम हो चुकी है कि जतिनी देर में कोई तेज़ गंदबाज़ एक ओवर फेंकता है, उतनी देर में चार टरक प्लासुटकि का कचरा महासागर में बहा दयिा जाता है ।

- परतयेक वरुष इस दनि की एक वरुश्व थीम होती और इस बार की थीम बीट प्लासुटकि पॉल्यूशन (Beat Plastic Pollution) है यानी प्लासुटकि प्रदूषण को हराएँ अरुथात् करेंगे संग प्लासुटकि प्रदूषण से जंग ।

पर्यावरण क्या है?

- आमतौर पर समझा जाता है कि वायु, जल, मटिटी, नदयिाँ, झीलें, जीव-जंतु और वनस्पतयिाँ मलिकर पर्यावरण का नरुमाण करते हैं । यह सीमति अरुथों में सच है ।
- व्यापक रूप से हम कह सकते हैं कि मनुष्य के आसपास का सारा वातावरण, घर के भीतर और बाहर, सभी कुछ पर्यावरण का हसुसा है ।
- हम यह भी कह सकते हैं कि कसिी कषुेत्र वरुश्व की भौतिक व जैवकि स्थति या परविश जो कसिी जीव या प्रजाति को प्रभावति करती हो, पर्यावरण कहलाता है ।
- यह भी कह सकते हैं कि धरती पर जसि कसिी चीज़ को देखा और महसूस कयिा जा सकता है, वह पर्यावरण का हसुसा है । इसमें मानव, जीव-जंतु, पहाड़, चट्टान जैसी चीजों के अलावा हवा, पानी, ऊर्जा आदिको भी शामिल कयिा जाता है ।

संयुक्त राषुट्र पर्यावरण (UNEP) क्या है?

पर्यावरण के मुददे पर अग्रणी वैशुवकि आवाज़ है--संयुक्त राषुट्र पर्यावरण । यह राषुट्रों और लोगों को आने वाली पीढ़यिाँ के जीवन से समझौता कयिा बनिा, उनके जीवन की गुणवत्ता सुधारने के लयि प्रेरति करता है, जानकारी देता है और युग्य बनाता है । ऐसा करके यह पर्यावरण संरकषण के लयि नेतृत्व प्रदान करता है और प्रोत्साहति करता है । संयुक्त राषुट्र पर्यावरण दुनयिाभर में सरकारों, नजिी कषुेत्र, सविलि सोसाइटी और संयुक्त राषुट्र की अन्य इकायिाँ तथा अंतरराषुट्रीय संगठनों के साथ मलिकर काम करता है ।

(टीम दृषुटि इनपुट)

प्लासुटकि क्या है?

- बेलजियम मूल के अमेरिकी वैज्ञानिक लयिो बेकलैंड को प्लासुटकि का आवषुिकरुत्ता माना जाता है ।
- उन्होंने फॉरमलडेहाइड और फेनॉल जैसे रसायनों के साथ प्रयुग करते हुए प्लासुटकि का अवषुिकार कयिा था ।
- इसे उन्होंने बैकेलाइट नाम दयिा था । इसके बाद प्लासुटकि ने बहुत तेज़ी से हर जगह अपनी पहुँच बनानी शुरू कर दी ।
- दुनयिाभर की प्रयुगशालाओं से प्लासुटकि के तरह-तरह के रूप सामने आने लगे, जनिमें पैकेजगि में इस्तेमाल होने वाली पॉलीसुटारेन, नायलॉन, पॉलिथियलेन जैसी चीजें शामिल थी ।
- इससे पहले तक प्लासुटकि की तरह की चीज़ सेल्युलाइड से बनाई जाती थी, जो पौधों से प्राप्त कयिा जाता था ।

लगातार बढ़ रहा है उत्पादन और खपत

- दशकों पहले लोगों की सुविधा के लिये प्लास्टिक का आविष्कार किया गया था, लेकिन धीरे-धीरे यह अब पर्यावरण के लिये ही नासूर बन गया है।
- आज प्लास्टिक अपने उत्पादन से लेकर इस्तेमाल के सभी चरणों में पर्यावरण और पारिस्थितिकीय तंत्र के लिये खतरनाक बन गया है।
- प्लास्टिक और पॉलीथीन के कारण पृथ्वी और जल के साथ-साथ वायु भी प्रदूषित होती जा रही है।
- हाल के दशकों में मीठे और खारे दोनों प्रकार के पानी में मौजूद जलीय जीवों में प्लास्टिक रसायन से होने वाले दुष्प्रभाव नज़र आने लगे हैं।

यहाँ-वहाँ, जहाँ-तहाँ प्लास्टिक ही प्लास्टिक

इसके बावजूद प्लास्टिक और पॉलीथीन की बिक्री में कोई कमी नहीं आई है। दरअसल इसके पीछे लोगों की यह धारणा काम कर रही है कि प्लास्टिक के सामान चटख रंग वाले और आसानी से साफ किये जा सकने वाले होते हैं। टपरवेयर के बने प्लास्टिक उत्पाद इसका एक बेहतरीन उदाहरण है। इसके अलावा प्लास्टिक से बनी चीज़ों के सस्ता होने की वज़ह से ये आसानी से सभी की पहुँच में होते हैं। आज लोगों के घर प्लास्टिक के सामान से भरे हैं...बाज़ार भरे हैं...इसके साथ कचरों के ढेर से दुनियाभर के देश भरे हैं।

महासागर भी पटे पड़े हैं प्लास्टिक से

- महासागरों में बढ़ता प्रदूषण चिंता का विषय बनता जा रहा है। ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच अवस्थित तस्मानिया सागर का क्षेत्र प्लास्टिक प्रदूषण के सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक है।
- धरती पर फेंका गया अरबों टन प्लास्टिक कचरा हर साल महासागरों में समा जाता है। आसानी से वधितति नहीं होने के कारण यह इनमें जस-का-तस पड़ा रहता है।
- केवल यदि महासागर में ही भारतीय उपमहाद्वीप से पहुँचने वाली भारी धातुओं और लवणीय प्रदूषण की मात्रा प्रतविरष करोड़ों टन है।

पारिस्थितिकीय तंत्र के लिये घातक

- लाखों टन प्लास्टिक कचरा रोज़ाना समुद्र में समा जाने से जैव विविधता भी प्रभावित होती है और समुद्री वनस्पतियों की वृद्धि पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है।
- प्लास्टिक की यह मात्रा पर्यावरण के लिये तो समस्या है ही, साथ-साथ जलीय जीव-जंतुओं के लिये भी जानलेवा साबित हो रही है।
- पृथ्वी के विशाल क्षेत्र में फैले अथाह जल का भंडार होने के साथ ही महासागर अपने अंदर व आस-पास अनेक छोटे-छोटे नाजुक परतित्तों को पनाह देते हैं, जसिसे उन स्थानों पर विभिन्न प्रकार के जीव-जंतु व वनस्पतियाँ पनपती हैं। प्लास्टिक इन सभी को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है।
- दुनिया के लगभग 90% समुद्री जीव-जंतु एवं पक्षी किसी-न-किसी रूप में अपने शरीर में प्लास्टिक ले रहे हैं।
- आर्कटिक सागर को लेकर किये गए एक शोध के अनुसार, अगर यही स्थिति रहती है तो 2050 तक समुद्र में मछलियों से अधिक प्लास्टिक कचरा नज़र आएगा।
- 1960 के दशक में पक्षियों के आहार में केवल 5% प्लास्टिक की मात्रा पाई गई थी, जबकि 2050 तक लगभग 99% समुद्री पक्षियों के पेट में प्लास्टिक होने की संभावना जताई जा रही है।

माइक्रोबडिस

प्लास्टिक के कुछ छोटे रूप भी हैं, जिन्हें माइक्रोबडिस कहा जाता है। इनका आकार 5 ममी. से अधिक नहीं होता। भारतीय मानक ब्यूरो ने कुछ समय पूर्व जैव रूप से अपघटित न होने वाले माइक्रोबडिस को उपभोक्ता उत्पादों में उपयोग के लिये असुरक्षित बताया। अमेरिका, कनाडा और नीदरलैंड जैसे देशों ने नज़ी देखभाल उत्पादों में माइक्रोबडिस के उपयोग को रोकने के लिये नियम बना रखे हैं, लेकिन इनकी रोकथाम के लिये भारत में अभी कोई नियम नहीं बना है।

(टीम वृष्टि इनपुट)

प्लास्टिक युग में रह रहे हैं हम

- हम अपनी ज़िंदगी के हर पहलू में प्लास्टिक को देखने के अभ्यस्त हो गए हैं और हमें यह आदत कई दशकों के लगातार इस्तेमाल से पड़ी है तथा आज प्लास्टिक हमारे व्यवहार में शामिल हो गया है।
- कभी चमत्कार के तौर पर ईजाद किये गए प्लास्टिक को हमने पहना है...ओढ़ा है...खेला है...जीवन का शायद ही कोई क्षेत्र बचा होगा जसिमें प्लास्टिक का हस्तक्षेप न रहा हो।
- पहले हमने प्लास्टिक से अपनी ज़रूरतें पूरी कीं, फिर इसके लिये नई ज़रूरतें पैदा कीं। यही कारण है कि प्लास्टिक आज हमारी ज़िंदगी के हर पहलू में शामिल है। न दिखाई देते हुए भी हमारी ज़िंदगी में शामिल हो चुका है, जैसे-रगों में दौड़ता लहू।
- दक्षिण-पूर्व एशिया में प्लास्टिक का कचरा बहुत बड़ी चुनौती बनकर सामने आया है और भारत भी इससे अछूता नहीं रहा है।

प्लास्टिक की मुलायम थैलियाँ और तमाम चीज़ों की पैकेजिंग में इस्तेमाल होने वाला प्लास्टिक आज पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचा रहा है तथा इसके साथ कदमताल कर रही हैं रोज़ करोड़ों की संख्या में इस्तेमाल होने वाली पानी और कोल्ड ड्रिंक्स की प्लास्टिक की बोतलें। तमाम प्रतविरषों के बावजूद इनका इस्तेमाल बढ़ता ही जा रहा है।

- भारत सहित कई देशों के लिये प्लास्टिक बहुत बड़ी चुनौती बनता जा रहा है, लेकिन इसे रोकने का कोई ज़रिया नहीं है।
- विश्व में चीन में सबसे ज़्यादा प्लास्टिक का उत्पादन होता है, लेकिन इसे रोकने का दबाव कोई देश चीन पर नहीं डाल सकता।

जीवन और पर्यावरण के लिये गंभीर खतरा

हमारे आस-पास इसका दैनिकि इस्तेमाल से यह हमारे खान-पान में भी दाखल हो गया है। वैज्ञानिक कब से कह रहे हैं कि हालात ऐसे ही बने रहे तो प्लास्टिक हमारे जीवन के लिये खतरा बन जाएगा। अपने आस-पास नज़रें दौड़ाने पर पता चलता है कि प्लास्टिक हमारी ज़िंदगी का अहम हिस्सा बन चुका है। लेकिन प्लास्टिक ने हमारा जीवन जतिना आसान किया है, उतना ही इसकी वजह से हम कठिनाई में हैं... विशेषकर ऐसा प्लास्टिक जो केवल एक बार इस्तेमाल करके फेंक दिया जाता है, जैसे थैलियाँ, पैकेजिंग और पानी की बोतल आदि। यदि हमने हालात पर काबू नहीं पाया तो प्लास्टिक शायद किसी रोज़ हमारे अंत की वजह भी बन सकता है।

प्लास्टिक प्रदूषण से जुड़े कुछ तथ्य

- जसि रफ़्तार से हम प्लास्टिक इस्तेमाल कर रहे हैं, उससे 2020 तक दुनियाभर में 12 अरब टन प्लास्टिक कचरा जमा हो चुका होगा और इसे साफ करने में सैकड़ों साल लग जाएंगे।
- प्रत्येक वर्ष दुनियाभर में 500 अरब प्लास्टिक कैंरी बैगों का उपयोग किया जाता है।
- हर वर्ष कम-से-कम 8 मिलियन टन प्लास्टिक महासागरों में पहुँचता है, जो प्रति मिनट एक कूड़े से भरे ट्रक के बराबर है।
- पछिले एक दशक के दौरान उत्पादित प्लास्टिक की मात्रा पछिली एक शताब्दी के दौरान उत्पादित प्लास्टिक की मात्रा से अधिक थी।
- हमारे द्वारा प्रयोग किये जाने वाले प्लास्टिक में से 50% प्लास्टिक का केवल एक बार उपयोग होता है।
- प्रत्येक मिनट 10 लाख प्लास्टिक की बोतलें खरीदी जाती हैं।
- हमारे द्वारा उत्पन्न किये गए कुल कचरे में 10% योगदान प्लास्टिक का होता है।
- हर वर्ष 80 लाख टन से भी अधिक प्लास्टिक महासागरों को प्रदूषित करता है।

क्या किया जा सकता है?

- देश में प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिये प्रयास तो किये जा रहे हैं, लेकिन सक्रिय जन-सहयोग के अभाव में इसके आशाजनक परिणाम सामने नहीं आ रहे।
- देश के 25 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में प्लास्टिक की थैलियों पर प्रतिबंध लागू किया गया है, लेकिन यह कतिना प्रभावी है, किसी से छपि नहीं है।
- भारत में प्रतिदिन 25,940 टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है, जसिमें से 40% कचरा एकत्र नहीं हो पाता।

चक्रीय अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों को अपनाया जाए

- चक्रीय अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों को लागू करके इस दुविधा का हल मलि सकता है। इन सिद्धांतों में डिज़ाइन में बदलाव करके प्रदूषण को निकाल बाहर करना, पदार्थों को इस्तेमाल में बनाए रखना और पुष्टिकारक तथा पुनरुत्पादक प्रणाली में एक प्राकृतिक पूंजी का निर्माण करना आदि शामिल है।
- चक्रीय अर्थव्यवस्था केवल प्लास्टिक और वस्त्रों जैसे पदार्थों की वैश्विक धाराओं पर ही लागू नहीं होती, बल्कि यह सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में भी उल्लेखनीय योगदान दे सकती है।
- इसके साथ नवरेचना को बढ़ावा देने वाले तंत्र भी होने चाहिये, जिनके तहत प्लास्टिक पैकेजिंग के डिज़ाइन को उसके एकत्रण, छंटाई और तत्पश्चात उसके पुनःउपयोग या पुनःचक्रण से जोड़ा जा सकता है।
- वैसे भी प्लास्टिक के नपिटान का सर्वाधिक उपयोगी तरीका इसका पुनःचक्रण (Recycle) है। पुनःचक्रण से तात्पर्य प्लास्टिक अपशिष्ट से पुनः प्लास्टिक प्राप्त करके प्लास्टिक की नई चीजें बनाना है।

(टीम वृष्टि इनपुट)

जन-सहयोग का होना बेहद ज़रूरी

- देश में जारी स्वच्छता अभियान के बावजूद प्लास्टिक युक्त कचरे से गाँव, कस्बे, नगर-महानगर, अंटे पड़े हैं और जगह-जगह प्लास्टिक युक्त कूड़ा-कचरा (प्लास्टिक बैग और बोतलें) बिखरा पड़ा रहता है।
- सरकार और स्थानीय निकायों की लापरवाही तो इसके लिये ज़िम्मेदार है ही, आम जनता का भी योगदान कम नहीं है इस समस्या को विकराल बनाने में। यही कारण है कि आज प्लास्टिक हमारे पीने के पानी में भी मौजूद है और भोजन में भी।

प्लास्टिक के खिलाफ लड़ाई के लिये किसी बड़े कदम की आवश्यकता नहीं है, बल्कि हमें अपने व्यवहार में पर्यावरण हतिषी छोटे-छोटे परिवर्तन लाने की ज़रूरत है। प्रत्येक व्यक्ती की पर्यावरण के प्रति सामाजिक ज़िम्मेदारी तो है ही, यह हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी भी है कि आने वाली पीढ़ियों के लिये पर्यावरण की रक्षा करें।

- खरीदारी करते समय कपड़े या जूट के थैले साथ लेकर जाएँ

- प्लास्टिक की थैलियों का पुनः प्रयोग करें
- पुनः प्रयोग की जा सकने वाली प्लास्टिक क्राकरी को अपनाएँ
- पहले से ही पैक किये गए खाद्य पदार्थों की खरीदारी कम करें

प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियम, 2016

प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियम, 2016 के तहत प्लास्टिक कचरे का पृथक्करण अपेक्षित है, जसिं प्रभावी रूप से लागू करने पर प्लास्टिक और अन्य सामग्री को पुनः प्राप्त किया जा सकेगा जसिसे पर्यावरण को हो रही क्षतिको भी कम किया जा सकता है।

- इन नियमों के तहत प्लास्टिक कैरी बैग की न्यूनतम मोटाई 40 माइक्रॉन से बढ़ाकर 50 माइक्रॉन कर दी गई है।
- जो नियम पहले नगर नगिम के क्षेत्रों तक ही लागू होते थे, उन्हें अब सभी गाँवों तक बढ़ा दिया गया है, क्योंकि प्लास्टिक ग्रामीण क्षेत्रों में भी पहुँच गया है।
- प्लास्टिक कैरी बैग के उत्पादकों, आयातकों एवं इन्हें बेचने वाले वेंडरों के पूर्व-पंजीकरण के माध्यम से प्लास्टिक कचरा प्रबंधन शुल्क के संग्रह की शुरुआत भी की गई है।

उल्लेखनीय है कि वर्तमान समय में देश में प्लास्टिक के इस्तेमाल पर रोक लगाने के लिये केवल यही एक नियम है कि कोई उत्पादक या दुकानदार 50 माइक्रॉन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक के कैरी बैग की बिक्री नहीं कर सकता। चूँकि यह नियम अन्य सभी प्रकार के प्लास्टिक पर लागू नहीं होता, इसलिये इसका उपयोग कम नहीं हो पा रहा है।

सड़क निर्माण में प्लास्टिक का प्रयोग

प्लास्टिक की वस्तुओं का उपयोग करने के बाद इन्हें कचरे में फेंक दिया जाता है, लेकिन अब इस प्लास्टिक कचरे से सड़कें बनाने की तकनीक पर काम चल रहा है तथा टाटानगर, जमशेदपुर, मुंबई और तमलिनाडु में प्लास्टिक कचरे का उपयोग सड़क बनाने में किया जा रहा है।

- इसके लिये बटुमिनि (डामर, तारकोल) के साथ प्लास्टिक कचरा मिलाया जाता है, जसिसे इस्तेमाल से सड़क मजबूत बनती है और पानी के प्रती प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।
- बटुमिनि कच्चे तेल के शोधन से निकलने वाला अपशिष्ट है और भारत अपनी आवश्यकता के अधिकांश पेट्रोलियम पदार्थों का आयात करता है।
- ऐसे में सड़क निर्माण में बड़े पैमाने पर प्लास्टिक के इस्तेमाल से बटुमिनि की खपत घटेगी, वदेशी मुद्रा की बचत होगी और प्लास्टिक के कचरे से होने वाले प्रदूषण को भी कुछ हद तक कम किया जा सकेगा।

नषिकर्ष: आधुनिक अर्थव्यवस्था का एक अनविर्य हस्ति बन चुके इस सर्वव्यापी प्लास्टिक को बनाने और इस्तेमाल करने के तरीके पर हमें जल्द-से-जल्द दोबारा सोचना होगा। दुनियाभर में प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण की समस्या चिंताजनक स्तर तक पहुँच चुकी है और इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि ही हो रही है। वर्तमान में प्लास्टिक का उपयोग सर्वव्यापी हो गया है और जैसे-जैसे उपभोक्तावाद बढ़ रहा है, वैसे-वैसे इसकी खपत भी बढ़ती जा रही है।

चूँकि प्लास्टिक को नष्ट होने में काफी समय लगता है तथा इसके कारण पानी से लेकर हवा और भूमि सभी प्रदूषित हो रहे हैं। अतः हमें प्लास्टिक के उपयोग पर तत्काल एवं बड़े पैमाने पर रोक लगाने की ज़रूरत है। इससे नजिात पाने के लिये व्यक्तिगत रूप से हमें अपनी ज़मिमेदारी का नरिवाह करना पड़ेगा, तभी यह पृथ्वी सुरक्षित रह सकती है। इस दशा में और अधिक गंभीरता के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। हमें एक समाज के रूप में एक ऐसा पारस्थितिकी तंत्र बनाने की ज़रूरत है, जो प्लास्टिक के उपयोग को कम करता हो और उसे बाहरी परविश में जाने से रोकता हो।